श्री पी न छ्न य मः श्रा
दो च श्रादिकरें
परणाम ब्रजविहारीलालकों
इष्ट श्रानंदके श्याम गुपयन
प्रियगोपालकों १
इकदिन श्रीगोपाल प्रभु यह
ठानी मनमांहं भात होत चल
लीजये गुपयन सों वन मांहं
२ सांझ समे सब ग्वा
लनकों ढिग टेर गुपालने व
न सुनायो सुनो रे भैया बात
हमारी हम इकनी को मतो भ
नायो अपने अपने दाऊकी
सोंहं चटकाहट सुन घरनें सब
आयो काहू सांकरी गलीमें
चलके धाप धाप के गोरस षा

यो ॥ २ ॥ दोहा ॥ इकइकलुकटी
हाथगहमान औहो सबग्वाल ॥
वनमैंयाविधमनोकर घरआ
ए गोपाल ॥ ३ ॥ कवित्त ॥ अबप्रात
कीआसनेंग्वालनकोंक्षिणनं
दनपडतरैनकेमाहीं ॥ तारागि
ननेंसंवरैनगई अजहूंतोभोर
प्रगटभईनाहीं ॥ या बहूसुखम
नरैंनापैंताछ्यासंतोषग्वाल
जहांनाईं ॥ ग्यारहसहस्त्रग्वाल
लैलुकटीपोहुंचे नंदद्वारकेपा
हीं ॥ ४ ॥ दोहा ॥ संकलखडकाव
नलग्योकोईसीटीमार ॥ कोई
ढीठटेरनलग्योजागोनंदकुमा
र ॥ ५ ॥ कवित्त ॥ योंटेरग्वालन
कीसुनकेनंदनंदननेदोऊनै

नउघाडे ॥ नव आनंदने परणा
मकीयो नव आनंदकों ब्रजराज
पुकारे ॥ अति प्रात भई न जगा
यो नैं अबवेगल्याव श्रृंगार हमा
रे ॥ श्रृंगार नवे आनंद ल्यायो अं
ग अंग विषें ब्रजराज सुधारे ॥ ६
॥ दोहा ॥ सीसमुकट करमैं लुकट
कटनटकछनी लाल ॥ कांधेकम
री पीनपट कटगर गुंजनमाल ॥
॥ ७ ॥ पुन नाना आभूषण पहरे
श्रीमोहनने अंग अंग के माहीं ॥
वलदाऊ कों निज संग लयो आ
पोंहुंचे नवग्वालन के पाहीं ॥ स
व ग्वालनने परणाम कीयो ति
नसों बोले ब्रजराज गुसाईं ॥ मेरे
होवेग चलो वनकों गोपी कहूं सी

दा॰ली॰
३

मनेंजावेंनाहीं॥ ५॥ दोहा॥ गोवें
ग्वालगुपालवलजहांसांकरीखो
र॥ रोकडगरठाढेभएनिहठांनं
दकिशोर॥ ६॥ कवित्त॥ क्षिणपा
छेंसीसनधरमटकीदधमाष
णजोजामीटरकी अनिमीठीजो
प्यारीनटकी आपोहुंचीनाहिड
गरग्वाला॥ विछुवनकीजवरुं
कारसुनीनवजानगएव्रजराज
गुणीग्वालनकोंनीचेठाढोकर
ऊंचेचढदेख्योगोपाला॥ सव
सीसनपरगोरसकोंधरअंग
अंगविषेंआभूषणभरवनमें
आवतमनमेंनहींडरहस्तीसम
रूमनतसववाला॥ लेलुकटीठा
ढहोभैयातुमकोंहैसन्नपिना

मैया॥ सबकोलूटोमाषणदैह
कीनीआज्ञायोंनंदलाला॥१०॥
दोहा॥ नवतोलुकटीहाथगह
रोकडगरसबग्वाल॥ खडेसां
करीगलीपरआयपोकुंचीब्रज
बाल॥११॥कवित्त॥चाहेंगोपीआ
गेचालेंआडेकरलुकटीकोंनव
हींरोकीग्वालनसबब्रजनारी॥इ
कदिसकोंबलदाऊठाढेग्वालाइ
कदिसइकदिसठाढेनिजवनवा
री॥ यहगतिनवदेखभईचक्र
नगुपयननवयहमनमांहंवि
चारी॥यहदेखभटूनंदकोढोटा
बनवीचकरनअबबटमारी॥१२॥
गोपिकाउचुः॥दोहा॥नवबोली

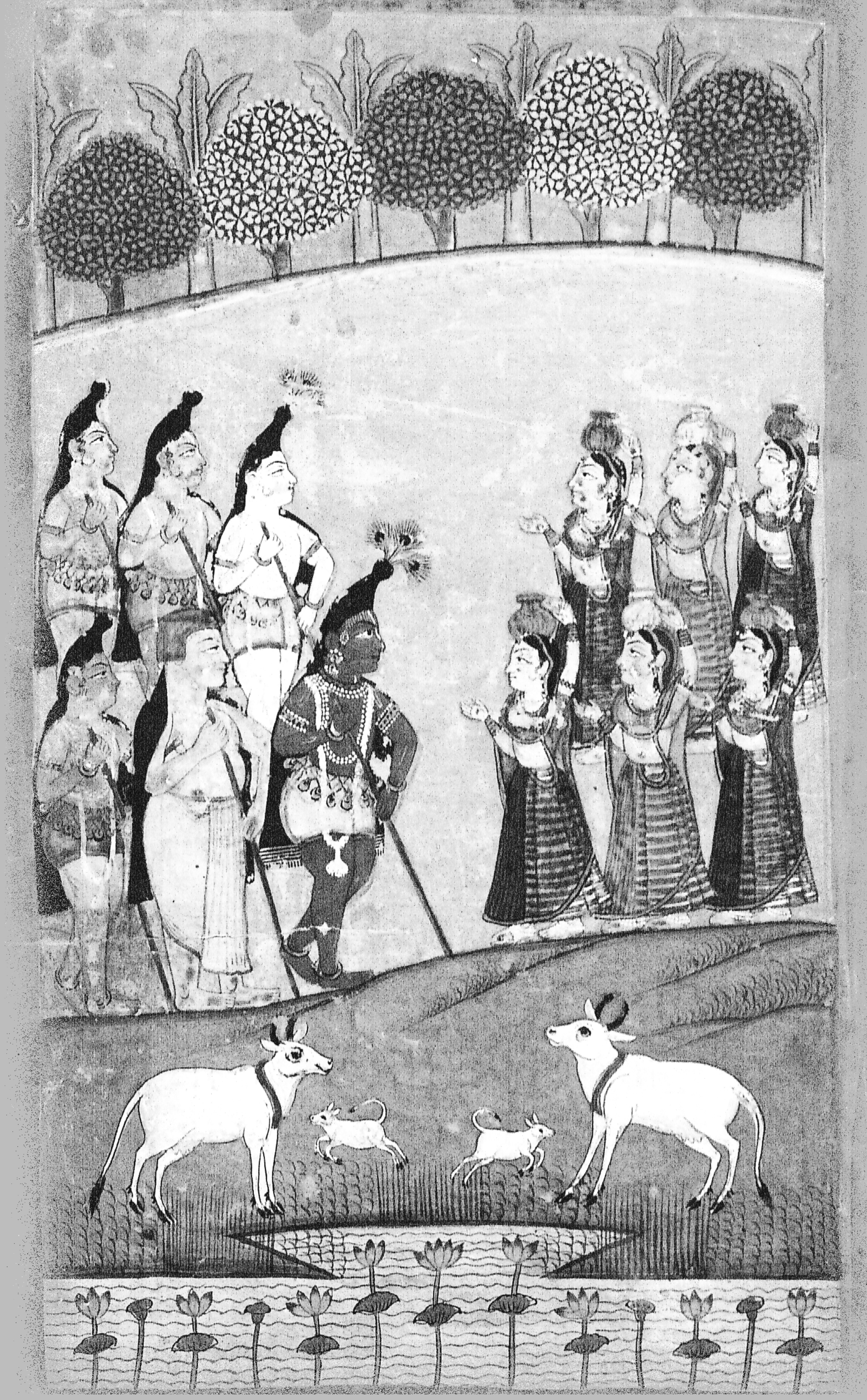

इकगोपिका सुननंदकेछेलजु
कौनकाजकहु आजतूंरोकनहम
रीगैल ॥ १३ ॥ कवित्त ॥ अबलौंनो
याब्रजकेभीतरकोईनभयोहे
हमारोरुकैया ॥ तुम अबरोकन
लागेहमकोंकहादीनसिखाय
तुमे अबमैया ॥ ऐसेंरोकलला
हमनेजानीइकठेकरहोबहुमु
हुबरुपैया ॥ दूधदहीहमरोबिग
रतहैकाहेइतनेभएढीठकहैया
॥ १४ ॥ श्रीगोपालउवाच ॥ दोहा ॥ गु
पयनकीयहबातसुनबोलेश्री
गोपाल ॥ रुईकानतेंकाढकेसु
नोसबीब्रजबाल ॥ १५ ॥ कवित्त ॥
तुमकोंबसनेंबेचनगोरसबहु
कालभयोयागोकुलमाहीं ॥ भ

रा॰ली॰
५

लोसांचकहोवाबाजूकोंकभूं
दानदियोअथवाकेनाहीं॥ हम
तोनितदामभरैंन्टपकोंउनकों
देंजबलेवेंतुमपाहीं॥ हमघरन
हींहोंजरसायनकछुजोदेंहमद्र
व्यकंसन्टपनाईं॥ १६॥ दोहा॥ या
नेंयाहीमैंभलोहमरीदेओजगा
त॥ विनालीयेनहींमानहूंकोट
कहोतुमबात॥ १७॥ गोपिकाउ॰चु॰
सिरपरमुकटीकरमैंलुकटीआ
डढेभएवनछैलचिकनयां॥ कां
नैंकमरीमोलहैंदमरीकानीहम
रीकटमैंकसकेनटलालकछनि
यां॥ अवचाहतहोहमकोंलूटोक
हाजान्योंहमेधुनयांमनयां॥
जहांकेतुमहोतहांकीहमहैंहम

कोंजिननजाननलला वनियां ॥ १८ ॥
॥ दोहा ॥ नेरी धमकी तें नांडरें हम
हैं चतुर ग्वाल ॥ छय गुलचा मुख
देयके निकसजांहं गोपाल ॥ १९ ॥
श्रीगोपाल उवाच ॥ कवित्त ॥ याबि
धसुनगुपयनकी वाणी वोले ब्र
जराजसुजान ज्ञाना ॥ कहारीतु
मकों अबभूतचढ्यो अथवा अ
वभांगभई अज्ञाना ॥ अथवाम
दयोवनको चढयो जानें मन अं
धभयोमदमाना ॥ मैं पूतचौध
रीनंदको हूं मोसों भाषो ऐसी जि
नवाना ॥ २० ॥ दोहा ॥ ऐसेक
नकठोर अबतुममोय कहे वषा
न ॥ नौ मैं वेटो नंदको जो डुगनो ले
ऊंदान ॥ २१ ॥ गो॰ का॰ चु॰ ॥

दा.ली.
६६

दोहा भुजउठायगोपीकहनलगुकु
टीहरिननतान ॥ ललादेखहेंकौ
नविधहमसोंलेहोदान ॥ २२ ॥
कवित्त यहछोटोसोमुखलेअप
नोअववेगललाजसुमनढिग
जाओ॥ जोगोरसकोंतुमचाह
नहोसोगोरसतुमहमसोंनहीं
पाओ॥ क्योंविरथांरोकहमेव
नमैंकाकाजललाराडमचाओ
हमजाननहेंतुमरेगुणसबजि
नगुणअपनेहमसोंखुलवा
ओ ॥ २३॥ दोहा॥ आओमानो
श्यामघनमारगरोकोनांहं॥ना
हींगुणअबपोलहेंतुमरेसबया
ठांहं ॥ २४ ॥ श्रीगोपालउवाच॥ दोहा
यहसुनबोलेश्यामघनहमरे

गुणहैं जोय ॥ ब्रह्मा नारद व्यास
शिवगाय सकन नहीं सोय ॥ २५
कवित्त ॥ तुम नारन मैं यह बुद्धि
कहां गुण नाम अनंत हमारे गा
ओ ॥ मैं बालक हूं मो बालक को
युग कोट अनंत लौं भेवन पाओ
अवनी की बात यही है गी मोय
दान दे ओ मथुरा कों जाओ ॥
नहीं लूं दूं गो दाऊ की सौंह जो तु
म मोकों बहु काल खिजाओ
॥ २६ दोहा ॥ मोकों छुधा पिया
स अति कीयो कल्ले ओ नांहं ॥
मेरो सूषत कंठ अब दया न तु
म मन मांहं ॥ २७ गोपका उ
वाच ॥ दोहा ॥ गोपी बोलीं श्याम
घन सुनो सांच यह बात ॥ छुधा

दा॰ ली॰
७

लगीतौभीषल्लेवकाहेकहत ज
गात ॥२८॥ कवित्त॥ नामजगात
कौकाहेकहो अवभीखलल्लाहम
सोंकछुलीजे॥ जोदामजगात
केमांगतहोतौमालजगातीअ
वकहदीजे॥ दंडौनकरोकरजो
डदोऊनवगोरसआहमसोंक
छुपीजे॥ नहींजाओलल्लाह
म आगेतेंहममेंयाभांतनको
ईपसीजे॥२९॥ दोहा॥ हाथजो
डजोमांगहोतौहमदेंहगुपाल॥
औरजोलेओजगाततुमदेअ
वनायअवमाल॥३०॥ श्रीगोपा
लउवाच॥ दोहा॥ यहसुनगुपय
नकेवचनबोलेश्रीगोपाल॥ भि
क्षुककहामोयजानयोंभीख

श्री·ली·
८

यो अवसरमहमारो ॥ आनंदको
मिठवोललगनमोहनको प्यारो
॥ ३३ ॥ दोहा ॥ धीग धीगकर जो न
होलूटलेंहगोपाल ॥ मालवनाए
विनकभूं बूंद नदें ब्रजवाल ॥ ३४ ॥
श्रीगोपालउवाच ॥ कुंडलिया यह
सुनके वोले नवें मोहन चतुर सु
जान ॥ सकलजगा नीमाल अव
सुनोसखी देकान ॥ सुनोसखी
देकान किरानो आदिवषानो ॥
केसर चंदन जान सवन अंग
नलिपटानो ॥ नेनन कजराव
हुनमाथ कस्तूरी वेंदी ॥ केशन
वीच फुलेलपगनमें राजनम
हंदी ॥ ३५ ॥ सोरठा ॥ यही किरा
नोजान ॥ वहुर कपड गद्दी कहें

देनब्रजवाल ॥ सुनोसवीब्रजवा
लकहामोयभिक्षुकजानो ॥ मैहूं
तुमरो खस्मयही निश्चयकरमा
नो ॥ जोतुमदेहोमोययहीतुमका
रजआवे ॥ पतिसुनकोंजोदेओ
सोसवविरथांहीजावे ॥ ३१ दोहा
अपनोपतिमोयजानकेसेवाक
रोवनाय ॥ औरजगानकोमाल
सवइकइकदेऊंगिनाय ॥ ३२ ॥
गोपिका उवाच ॥ कुंडलिया ॥
मधुरवचनसुनछलकेहंसनल
गीसववाल ॥ सुनोभट्टगोपाल
कीनईभईयहचाल ॥ नईभई
यहचालकभूंआगेनहींदेखी
आगेहैयेवालकरनअववहुवि
धसेखी ॥ हमसोंकरनठठोलभ

इकइककोलेंदान॥ नवहमबे
टनंदके॥ ३६॥ कवित्त॥ सालूकेडं
डयेसीसनपर जिनकों लागीव
हुतकिनारी॥ कपडधूरकीवनी
ओढणी जिनके आंचलपछूभा
री॥ मखतूलीकीसववनी कंचुकी
जिनमेंदोदोसेवअनारी॥ लहंगा
मशरूखीमखापके पहरेहोस
वब्रजनारी॥ ३७॥ दोहा॥ नाडा
रेशमकेवहुनफुंदनाजिनेअने
क॥ याविधतुमवस्त्रधरनसव
गोपीइकएक॥ ३८॥ कवित्त॥ अव
आभूषणजहांलोंननमेंचिन
लायसुनोसवव्रजनारी॥ वंदी
टीकेसीसनसोहन जिनवीचर
ननलागेभारी॥ झुमकाकरण

९

सासकनकवारा॥ गजमु
नीनाकनमें जिनमें वेस
वन्यारी॥३९॥ दोहा॥ अ
षणकंठके सोसव करें कृ
मोयगो धनकीस म्रहै इक
कोलेऊं दान॥४०॥ कवित्त॥
नीकंठीहार औरमुक्तन
ला॥ दुलरी तिलरी माल औ
पाकलीविशाला॥ वहुर धु
गीजानउरवसी गरमें सोहै
हुरपंचलडमालहमारे म
मोहे॥४१॥ दोहा॥ भुजावंद
नकनक छन्न पछेली हाथ॥
छ्लामुंदी आरसी चूरी जिनवे
थ॥४२॥ कवित्त॥ पायनमें

रसोहनहैं जिनऊपरहेमकी
झांझ विराजें ॥ अंगुलनमैंकं
चनके बिछुवासोछम छमछ
म छम छमछमवाजें ॥ लक्ष
णकोकंचनहैइनमैं औररत
न अमोल अनोलविराजें ॥ इ
कइककीलेंहजगात अवहम
काहूविधकरतुमसोंनहींला
जें ॥ ४३ ॥ दोहा ॥ जहांलौंमाल
गिनाइयो अवहमनेतुमपांह ॥
भलोकहोकोसोंजकी अवजगा
तहैनांहं ॥ ४४ ॥ गोपिका उचुः ॥
कुंडलिया ॥ यहसुनवोलीगो
पिकासुनढोटावटमार ॥ तेरी
अवहमनंदघरजाकेकरेंपुका
र ॥ जाकेकरेंपुकारनंदकोढीठ

कन्हैया॥ मथुराकोजोपंथनहां
कोभयोलुटैया॥ नंदरायकेसहि
ततुमेनहांपकडमंगावें॥ तोकों
देकेदानबहुतहमनहांरिझावें
॥४५॥ श्रीगोपालउवाच॥ सोरठा॥
यहसुनवचनरिसाल॥ गुपयन
केश्रीश्यामघन॥ बोलेश्रीगोपा
ल॥ सुनोगोपिकाममवचन॥
॥४६॥ कवित्त॥ जोशरणहमारी
तुमआवतमोयकंसकोभयदि
खरावतनाहीं॥ तोनामहमारो
दीनदयालजोआवतशरणहमा
रीमाहीं॥ जोसवतजइकहमकों
भजतहैउनकोंहमहोतहैंसदा
सहाई॥ तुमनेममशरणत्याग
दई॥ अवदेतहोकंसरजाकीदु

हाई ॥ ४७ ॥ दोहा ॥ देखोलूटनहूं
तुमेकैसोनीकवनाय ॥ मेरेवार
उखाडलेकंसराजअवआय
॥ ४८ ॥ गोपिकाऊचुः ॥ कुंडली
यहसुनवोलीगोपिकासुननंद
लालसुजान ॥ कहांकेतुमराजा
भएहमसोंमांगनदान ॥ हमसों
मांगनदानअजहूंहोगोपकहै
या ॥ वेचनहैंदधदूधसदानेरेवा
पऔरमैया ॥ गोवछरनकेश्याम
सदावनमांहंचरैया ॥ अवलूटे
वनमांहंहमेतूंहेहैदैया ॥ ४९ ॥
सोरठा ॥ हमरेनृपवृषभान
जिननवसायोहैतुमे ॥ यहसीम
उनकीजान ॥ तुमरेवावाकोक
हा ॥ ५० ॥ श्रीगोपालउवाच ॥ दो

ग्वा·ली·
११

॥ यहसुनगुपयनकेवचनहुंकारे गोपाल ॥ ग्वालनकों आज्ञाकरीलूटोरेब्रजवाल ॥ ५१ ॥ कवित्त ॥ यह आज्ञाले श्रीमोहनकी नवग्वलनढीलकरीकछुनाहीं ॥ गुपयनकेझुंडमेंकूदपडेवलदाऊ औरमोहनहूंमाहीं ॥ इकइकमटकीदशदशग्वाला दधषानलगे वैठेइकठांई ॥ योंटेरकहतसव ग्वालनसों श्रीमोहन औरवलरामगुसाईं ॥ ५२ ॥ दोहा ॥ मालकदर्जनको मिल्यो षाओसखा अंघाय ॥ तुमकोंमेरीसप्नहे जिनभूषोरहजाय ॥ ५३ ॥ सोरठा ॥ लूटीजवब्रजनार ॥ सव अनिहीं व्याकुलभईं ॥ हाहाकरनपुकार

मूलसकलसुधबुधगई॥ ५४॥
कवित॥ केनककीनवचोली फाटी
वहुगुपयनकीमटकीफूटी॥ केन
ककी फाटगई साडी केनकवेना
वंदीछूटी॥ केनककेलहंगा टूकभ
ए केनककीछनचूडीटूटी॥ नीकी
विधसोंनंदकेछैलावनमैंयावि
धगोपीलूटी॥ ५५॥ दोहा॥ आ
पहूंषान ओरसखनसों आज्ञा
करतगुपाल॥ वहुनपेटभरभर
सकलषाओमेरेग्वाल॥ ५६॥
कवित॥ यहसूमनको अवमा
लमिल्योनीकीविधषायवच
नढरकाओ॥ वहुदिवसविषेंये
हाथलगी ऐसोदिनकालवहुर
नहींपाओ॥ जवषायचुकोगोर

सइनकोफोडोभाजनवनकोंभ
जजाओ॥ गोपीरोवनवोलनवा
णीकवहूंनोश्यामअपनघरआ
ओ॥५७॥दोहा॥नेकदहीढरका
इयोवंधेऊखरीसाथ॥ अवनोढ
रकायोमननदेखोगेव्रजनाथ
॥५८॥दोहा॥हमतवछुटवाये
हुतोजसुमनसोंसिरटेक॥अव
सनमुखवंधवायकेदयाकरेंन
हीनेक॥५९॥सोरठा॥जोतैंहं
मसोंकीन॥तैसीहमतोसोंकरें
सुनमोहनपरवीन॥नवहमस
वआनंदभरें॥६०॥श्रीगोपा
लउवाच॥सोरठा॥यहसुनवोले
श्याम॥तुमेसप्तसुनपतिनकी
अवहींजासववाम॥धगडेकी

चुकलीकरो ॥ ६१ ॥ सोरठा ॥
दिनकोंमारूं बाट ॥ निसतुम
घरचोरीकरूं ॥ मोकोंसपनहै
नंदकी ॥ यहीसदाअवप्रनधरूं
॥ ६२ ॥ कुंडलिया ॥ गोरसखाद
धदूधतेंभरेजोदोऊहाथ ॥ पूंछ
सखीकेवस्त्रसोंभाजेनवब्रजना
थ ॥ भाजेनवब्रजनाथसंगदो
ऊ औरग्वाला ॥ तजकेसांकरी
खोडरूंधमैंगएगुपाला ॥ गो
रसप्रभुकरवेचघरनआई
ब्रजवाला ॥ यहलीलायाभांतक
रीब्रजमैंनंदलाला ॥ ६३ ॥ दोहा ॥
आनंदयहलीलासदापढेसु
नेचितलाय ॥ ताघरमैंभोज
नकरेंगोरसब्रजपतिआय ॥ ६४

दा०ली०
१२

६२५

॥ दोहा ॥ आनंदवन काशीपु
री जहां वसके आनंद ॥ गुणगा
ए गोपालके दया करी गोविंद ॥
६५ ॥ दोहा ॥ संवत महा पुनी
तहै ठारह सौ चालीस ॥ पूर्णदा
नलीला करी हरिह निवावेंसी
स ॥ ६६ ॥ इति श्री दानलीला आ
नंदकृत भाषायां संपूर्णं समाप्तं
॥ दोहा ॥ अति उत्तम काशी नग
र राजमंदिर निज धाम ॥ लिखी
ज्योतिषी विप्रने नाम बुलाकी
राम ॥ १ ॥ षष्ठ वेद धृति वर्ष में १८४६
श्रावण शुक्ल पक्ष जान ॥ तिथ्य चतु
र्थी वार रवि उत्तरा फाल्गुनि जा
न ॥ २ ॥ श्री गोपालाय नमः ॥
श्री गोपीजनवल्लभाय नमः ॥